# SYNOPSIS

# पंकज सुबीर की कहानियों में स्त्री विमर्श

## Feminism in the Stories of Pankaj Subheer

*Submitted by*

**Dincy George**

**19PHHIF001**

*Supervisor*

**Dr.G.Shanthi**

**Associate Professor, Department of Hindi**

*Submitted to*

**Avinashilingam Institute for Home Science and Higher Education for Women**

**Coimbatore — 641 043**

**February 2023**

# पंकज सुबीर की कहानियों में स्त्री विमर्श

समकालीन युग स्त्री विमर्श के लिए जाना जाता है। आधुनिक भावबोध तथा मूल्यबोध के फलस्वरूप स्त्री जीवन में अनेक परिवर्तन हुए। स्त्रियों की समस्या, हर्ष–विषाद, चेतनाशील जागरूकता सभी समकालीन कहानियों के केन्द्र में आए और कथानक के आधार बने। समकालीन भारतीय साहित्य में विशेषतः कहानी साहित्य में 'स्त्री विमर्श' भारतीय समाज की विसंगतियों की उपज है। आज की नारी, पुरुष प्रधान समाज द्वारा निर्मित नियमों के पिंजरे तोड़कर, इस विशाल जगत् के विभिन्न क्षेत्रों में पदार्पण करने लगी और सामाजिक, शैक्षिक, या संगठनात्मक कार्यों में अपना योगदान दे रही है। वेदों और पुराणों में स्त्री शक्ति को मातृ–शक्ति के रूप में स्वीकारा गया है। फिर भी प्रति दिन उसका शोषण और समस्याएँ बढ़ते जा रहे हैं । स्त्री की ऐसी स्थिति को सुधारने उसे विविध समस्याओं तथा सामाजिक और धार्मिक अन्याय से रक्षा करने के लिए, पंकज सुबीर ने जो कुछ प्रयास किए उनका प्रभाव अपने साहित्य पर भी दिखाई देते हैं। हिन्दी साहित्य में प्रेमचन्द से लेकर आज तक अनेक पुरुष और नारियॉं, स्त्री समस्या को अपना विषय बनाया है। पंकज सुबीर जैसे स्त्रीवादी लेखक ने पितृसत्तात्मक समाज के अंतर्विरोध के बारे में पूरी सजगता के साथ गूढ विचार प्रकट किया है। यह सर्वविविध है कि पुरुष सत्तात्मक सामाजिक संरचना के अंतर्गत स्त्रियों के व्यक्तित्व का विकास न होता, बल्कि उनका व्यक्तित्व विकृत होता है। लेकिन पढी –लिखी आधुनिक विचार की महिलाएँ अपने व्यक्तित्व और स्वाभिमान को प्रमुख स्थान देते हुए अपने व्यक्तित्व की स्थापना करने की कोशिश करती हैं। स्त्रीवादी लेखकों में समकालीन हिन्दी साहित्यकार पंकज सुबीर का विशिष्ट स्थान है। उन्होनें स्त्री मुक्ति एवं उनकी विभिन्न समस्याओं को केन्द्र में रखकर अपने विचारों को साहित्य द्वारा प्रस्तुत किया। उनकी रचनाओं में स्त्री को अपने बदलते हुए परिवेश में चित्रित किया है। छोटे कस्बों से लेकर बाज़ारवादी आर्थिक परिवर्तनों के बीच संघर्ष करती हुई नारी जीवन को हमें पढ सकते है। पंकज सुबीर की स्त्रीवादी साहित्य की सार्थकता और सफलता यह है कि, एक पुरुष कहानिकार होने पर भी उनकी कहानी एक स्त्री के भावुक मन के अंदर तक छू लेती है। लेखक के दृष्टिकोण में स्त्री को सशक्त बनना है तो स्त्री अपना वातावरण, परिवेश, और सुख–दुःख के साथ दृढता से रहना अनिवार्य है ।

## शोध का उद्धेश्य

- नारीवादी साहित्य के क्षेत्र में ज्ञान प्राप्त करने के लिए महिलाओं को सक्षम बनाना।
- पंकज सुबीर के लेखन के आलोक में भारतीय नारीवाद को समझना।
- पंकज सुबीर की कहानियों में स्त्री विमर्श का विश्लेषण करना।
- पंकज सुबीर की कहानियों में आधुनिक परिवेश में मूल्य परिकल्पना।

**साहित्य समीक्षा :**

समकालीन कहानिकार के रूप में पंकज सुबीर का महत्वपूर्ण स्थान है। उनसे साक्षात्कार लेने का एक सुअवसर हमें मिला, जिसे मैं अपना सौभागय मानती हूँ। उन्होनें मेरे कुला तीस प्रश्नों के लिए उत्तर दिया है। अभी तक उनकी रचनाओं में शोध कार्य पूर्ण नहीं हुआ। यह मेरा गर्व की बात है कि उनकी कहानियों में शोध करने का वरदान हमें प्राप्त हुआ है। जहॉं तक मेरी ज्ञान की जानकारी है, मैंने उनकी कहानियों में स्त्री विमर्श पर शोध कर, अपने को धन्य मानती हूँ।

## प्रेरणा एवं सामग्री स्त्रोत

**प्रेरणा :** भारत में महिलाएँ अब सभी तरह की गतिविधियाँ जैसे कि शिक्षा, राजनीति, मीडिया, कला और संस्कृति आदि में हिस्सा ले रही है। फिर भी आधुनिक समाज में स्त्रियों की अनेक समस्याएँ हैं। स्त्री समस्या और इसका सुझाव तथा स्त्री विमर्श संबंधित एक नया दृष्टिकोण पंकज सुबीर की कहानियों में देखकर मेरे मन में इस क्षेत्र में शोध करने की आकांक्षा उत्पन्न हुई।

**सामग्री स्त्रोत :**

**प्राथमिक स्त्रोत :** पंकज सुबीर की कहानियाँ, लेखक पंकज सुबीर से साक्षात्कार, स्त्री विमर्श संबंधी पुस्तकें, पत्र–पत्रिकाएँ, एवं निजी अनुभव।

**सहायक स्त्रोतः** वेबसाइट एवं सामाजिक माध्यमों के विभिन्न एप।

इस विषय पर गहराई से अध्ययन करने के लिए मैंने इस शोध कार्य को पाँच अध्याय में विभक्त किया है।

### प्रथम अध्याय – समकालीन हिन्दी कहानी और स्त्री विमर्श के विविध आयाम

समकालीन कहानियों में जीवन की हर एक घटना का चित्रण रहता है और सामाजिक चेतना भी प्रकट होता है। स्वतंत्रता के बाद उपजी हिन्दी कहानी संपूर्ण विकास क्रम में अनेक आन्दोलनों से गुज़री है। नयी कहानी से सक्रिय कहानी तक के सभी प्रकार के कहानी आन्दोलनों के उतार–चढाव को पार करते हुए, विकास के परमोन्नत पद पर पहुँचती हुई इक्कीसवीं शताब्दी में पहले से ज़्यादा विकास के पथ पर चल रही है। इस अध्याय में कहानी की परिभाषा, कहानी के वर्गीकरण, कहानी के तत्व, समकालीन हिन्दी कहानी के विविध आयाम, समकालीन हिन्दी कहानी की परिवेश एवं प्रवृत्तियाँ तथा स्त्री विमर्श का स्वरूप, स्त्री विमर्श की मूल प्रवृत्तियाँ, स्त्री विमर्श और समकालीन संदर्भ आदि विषयों पर प्रकाश डाला गया है।

### द्वितीय अध्याय – पंकज सुबीर – व्यक्तित्व और साहित्य सृजन

समकालीन कथा साहित्य का सबसे सशक्त, विश्वसनीय और लोकप्रिय कथाकार हैं पंकजसुबीर। द्वितीय अध्याय में भारतीय ज्ञानपीठ युवा पुरस्कार, अंतराष्ट्रीय कथा यू के सम्मान, वागीश्वरी सम्मान आदि से पुरस्कृत कहानिकार पंकज सुबीर का व्यक्तित्व एवं साहित्य सृजन का विस्तृत विश्लेषण किया गया है। उनका जन्म, परिवार, शिक्षा, लेखकीय प्रेरणा स्त्रोत, उपाधि एवं पुरस्कार, साहित्य सृजन का परिचय तथा समकालीन स्त्रीवादी लेखकों में पंकज सुबीर का स्थान, स्त्री सशक्तीकरण के लिए स्त्रीवादी लेखन, स्त्रीवादी लेखन का उद्वेश्य और महत्व एवं स्त्री उद्वार के लिए पंकज सुबीर के योगदान आदि विषयों का अध्ययन किया गया है।

### तृतीय अध्याय – पंकज सुबीर की कहानियाँ – एक अवलोकन

आधुनिकता एक प्रक्रिया का नाम है जो अन्धविश्वास से बाहर निकालने की प्रवृत्ति को कहा जा सकता है। आधुनिकता वह है, जो मनुष्य को जाति या गोत्र से नहीं बल्कि कर्म से नापता है और हर इन्सान को समान समझता है। पंकज सुबीर आधुनिकता और वास्तविकता का ऐसे एक कहानिकार है, जिनकी कहानियाँ अपने समय और अपने निजी अनुभवों के आधार पर लिखा गया है। आधुनिक युग में साधारण लोगों के जीवन में परिवर्तन आए, जीवन मूल्य बदले, आर्थिक समस्याओं से भारतीय जनता गुजरे, नारी जीवन के ऐसे परिवर्तन और संघर्ष उल्लेख पंकज सुबीर ने अपनी कहानियों में किया है। इस अध्याय में

'महुआ घटवारीन और अन्य कहानियॉ', 'ईस्ट इंडिया कंपनी', 'होली', 'चौपडे की चुडैलें', एवं 'कसाब गांधी यरपादा.इन' आदि सुबीर जी की प्रमुख पॉच कहानी संग्रहों में संग्रहीत पैंसठ कहानियों का संक्षिप्त विवरण दिया गया है।

## चतुर्थ अध्याय – पंकज सुबीर की कहानियों में चित्रित स्त्री विमर्श –एक विश्लेषण

महिलाओं को मुक्ति की आवश्यकता के बारे में जागरूक करने के लिए साहित्य सबसे अच्छा माध्यम है। पंकज सुबीर वास्तव में अपनी कहानियों के माध्यम से महिलाओं की दयनीय जीवन स्थितियों पर प्रकाश डालते हुए उन्हें सशक्त बनाने की कोशिश की है। इस अध्याय में, सामाजिक ,पारिवारिक, शैक्षिक क्षेत्र में धार्मिक, आर्थिक, क्षेत्र में राजनीतिक क्षेत्र में स्त्री विमर्श आदि बिन्दुओं पर विचार विश्लेषण किया गया हैं।

## पंचम अध्याय – पंकज सुबीर की कहानीयों की भाषिक संरचना

भाषा साहित्यकार की साधन है। रचनाधर्मिता में भाषा जैसी साधन ही महत्वपूर्ण होता है। जैसे साधन होगा उसके अनुरूप ही साध्य की सिद्धि होती है। उनकी कहानी साहित्य कहानी कला की दृष्टि से अलंकृत हुआ है। इस अध्याय में पंकज सुबीर की कहानियों को शिल्प वैविध्य के आधार पर ऐसे अनुच्छेदों में विवेचित किया गया है जैसे, वस्तु विन्यास, चरित्र चित्रण, भाषा तथा शैली आदि। इसके अंतर्गत सुबीर जी की कहानियों में विशेष प्रकार से प्रयोग किये गये देशज और विदेशी शब्द का प्रयोग, तत्सम और तद्भव शब्द, लोकोक्ति और मुहावरे का प्रयोग, संवादात्मक शैली, काव्यात्मक शैली, विवरणात्मक शैली, वर्णानात्मक शैली, पत्र शैली, विश्लेषणात्मक शैली, संगीतात्मक शैली, किस्सागोई शैली आदि भाषिक पक्ष पर भी विचार किया गया है।

# उपसंहार

बदलते सामाजिक यथार्थ के साथ – साथ समकालीन हिन्दी कहानी की संवेदना में भी बदलाव आया है। आज की कहानी यथार्थ की जटिलताओं और सामाजिक अंतर्विरोधों के साथ उद्घाटित करती है। अपने समय के नए प्रश्नों और चुनौतियों को बखूबी उभारता समकालीन कहानिकार पंकज सुबीर, सामान्य जीवन और व्यवस्था के षडयंत्र, नारी जीवन की विभीषिका, दलित जीवन का यथार्थ, आदि की अभिव्यक्ति के साथ – साथ वैश्वीकरण, बाजारवाद, और सांप्रदायिकता जैसे गंभीर प्रश्नों पर भी नज़र रखा है। इन तमाम प्रश्नों को पाठकों के सामने रखकर आज की समकालीन कहानी, वर्तमान जीवन के बहु आयामी यथार्थ को वास्तविकता के साथ आगे बढ रहे है। सरलता, लघुता और प्रचलन के आधार पर देखें तो कहानी का स्थान समकालीन हिन्दी साहित्य के समस्त प्रकारों में सर्वोन्नत पद पर विराजित है। समकालीन लेखकों में पंकज सुबीर एक ऐसे लेखक हैं, जिन्होंने स्त्री विमर्श को एक नया आयाम दिया है। उनका लेखकीय जीवन एक साधना है। दीपों की तरह वे स्वयं जलकर दूसरों को प्रकाश देते हैं और सब के जीवन में ज्ञान के दीप जलाकर, जगत् के समस्त अंधेरे को अपनी लेखनी के बल पर नया रास्ता और मार्ग–दर्शन देते हैं। सुबीर जी की कहानियों में मानवीय मूल्यों एवं सामूहिक गतिविधियों का एक झलक भी देख सकते हैं। समाज के किसी भी क्षेत्र में अगर कुछ बदलाव आता है तो, उसका प्रभाव साहित्य लेखन पर पड़ना स्वाभाविक है। इसी प्रकार का बदलाव हमें कहानी साहित्य में पंकज सुबीर की कहानियॉ में भी देखने को मिलते हैं। उन्होनें समाज में उपस्थित जाति व्यवस्था, नारियों की समस्या, तकनीकी के नवीन युग में पले बच्चों और युवा पीढियों की मनोचेतना, धार्मिक भेदभाव, अंधविश्वासों एवं अनाचारों, राजनीतिक और आर्थिक समस्या, आदि विषयों का सूक्ष्म निरूपण किया है।

स्त्री विमर्श को, स्त्री का स्त्री के लिए स्त्री द्वारा लेखन मानने पर स्त्रीविमर्श का विषय की सीमाएॅ स्त्री तक सीमित हो जाता है और हमेशा की तरह पुरुष इस विषय के बाहर का व्यक्तित्व हो जाता है।

आधुनिक युग में स्त्री विमर्श सिर्फ स्त्री के सोचने का विषय नहीं है यानी स्त्री पर सोचने का विषय है। स्त्रीवादी लेखन में पुरुष और महिला लेखन में बहुत सारा अंतर होता है क्योंकि एक स्त्री की ऑखों से स्त्री की समस्याओं को देखने में और पुरुष की ऑखों से स्त्री की समस्याओं को देखने में अंतर स्वाभविक है क्योंकि स्त्री की दृष्टिकोण पुरुष से अलग होती है। फिर भी पंकज सुबीर जैसे पुरुष लेखक ने अपने आसपास के स्त्री चरित्रों को चुनकर उनकी यथार्थ ज़िन्दगी और समस्याओं को उनकी ऑखों से देखकर उनके पक्ष में खडे होकर स्त्री सशक्तीकरण के लिए महत्वपूर्ण योगदान दिया हैं।

समकालीन समाज में 'बेटी बचाओ' और 'बेटी पढ़ाओ' आदि बात बहुत शोर से आगे बढती है। लेकिन वास्तव में इस बची हुई या पढ़ी हुई स्त्रियों में बहुत कम व्यक्तित्व को ही सम्मानित व्यक्तित्व से सुशोभित होने का अवसर मिल रहा है। शिक्षित होने पर भी इन स्त्रियों का किस्मत तो आज भी उसी काली स्याही से लिखा जा रहा है। इसी वजह से कई पढी –लिखी लड़कियों ने आचार – अनुष्ठान तथा पारम्परिक, पारिवारिक सत्ता को नकारते हुए 'लिविंग टुगैदर' जैसे नया जीवन शैली शुरू कर दिए हैं। और कुछ स्त्रियों ने ऐसे विद्रोही वातावरण तैयार कर दिया है, जो पूरे परिवार को नष्ट–भ्रष्ट करने में सक्षम है। जो स्त्रियॉ आज भी समाज, परंपरा, धर्म एवं संस्कारों के कपट कानून के नियंत्रण में खडी हैं, उनके ऑसुओं का सैलाब में मानव वंश डूब जाएगा।

पंकज सुबीर के पॉच कहानी संग्रहों के आधार बनाकर स्वच्छन्दतावादी दृष्टिकोण से विचार विश्लेषण किया गया तो स्त्री स्वतंत्रता और स्त्री पुरूष समरसता के बारे में एक नया अवबोध मिलता हैं और हर एक कहानियों में स्त्री–जागरण, स्त्री स्वतंत्रता एवं स्त्री विमर्श के बहुआयामी प्रकार्यों को मनोवैज्ञानिक फलक पर तराशते हुए स्त्री चित्रण को एक नया रूप–भाव प्रदान किया। जैसे, आधुनिक परिवेश में स्त्री, कुप्रथाओं को सुधार करने का कोशिश, सशक्त क्रान्तिकारी नारी, आत्मशक्ति और स्वतंत्रता का पहचान, आदिवासी स्त्री जीवन, आदर्श रूपी मॉ, स्त्री प्रतिरोध की आवाज, धार्मिक पॉखड तथा कपटता को तोडने का साहसी, उपेक्षित एवं बंधित स्त्री, जीर्ण रिवाज़ों और अंधविश्वासों को तोडनेवाली नारी चरित्रों का चित्रण हुआ है। आधुनिक युग में नारी के प्रति समाज के दृष्टिकोण में बदलाव ज़रूर आएगा। इस बदलाव के लिए स्त्री स्वयं अपनी लडाई लडने की संकल्प शक्ति से युक्त होना जरूरी है, क्येंकि समाज या परंपरा के सिवा नारी कहीं बंधिनी है तो अपने ही बंधन से बंधी है, अपनी अन्तरात्मा से बंधी हैं, अपनी भावनाओं की जंजीरों से बंधी है, यही दुर्भाग्य बनने लगा है। उसकी स्वयं की सोच ही उसकी बेड़ियां बन जाती हैं, जिन्हें तोड़ना भी केवल उसी के हाथ में निर्भर है, किसी और के नहीं।

आज की स्त्री अपना अधिकार और स्वाभिमान हासिल करने के लिए संघर्ष की राह पर है। चाहे वह 'अप्रैल की एक उदास रात ' की 'डॉ.शुची' या फिर 'तमाशा' कहानी की नायिका 'कुसुम' या सुबह अब होती है' की नायिका 'बूढ़ी मॉ' या 'रुक गया फागुन' की 'बूआ रूपा' सभी अपने अस्तित्व को नये रूप से परिभाषित करने की राह पर है। 'तमाशा' कथा की नायिका 'कुसुम' स्वयं को रूढ बद्व समाज से टकराते और अपने अस्तित्व को नये सिरे से व्यक्त करने की कोशिश कर रही है। अपने नाम के साथ मॉ के नाम को स्थान रखकर वह समाज और पितृसत्तात्मक परंपरा के जड़ मूल्य को चुनौती देती हुई अपना अलग पहचान बनाती है।

'अप्रैल की उदास रात' कहानी में स्त्री शोषण और विद्रोह चित्रित हुआ है। डॉ. शुची की प्रतिरोध है कि वह अपने धोखेबाज़ प्रेमी की सौतेली मॉ बनकर उसके जीवन में आ गई। 'रुक गया फागुन' कहानी में पात्र 'रूपा' शोषण के विरोध प्रकट करते हुए समस्याओं को सामने करने का राह भी दिखाती है। हर नारी के जीवन में कुछ स्थितियों या परेशानियों को सामना करना पडता है। नारी कोमल मन और तन के साथ अपने अंदर एक दृढ़ शक्ति की चिंगारियॉ रखनी चाहिए। सुबीर जी ने आधुनिक नारी का जो जो रूप अपनी कहानियों में प्रस्तुत किया है, वह प्रतिरोध असाधारण और अनुपम है।

**कहानियों का विश्लेषण करने के बाद, हम इस निष्कर्ष पर पहूँचते है कि, हर कहानी में स्त्री जीवन की समस्याओं को स्पर्श किया वहॉ समस्याओं का हल भी दिया है।**

- हर कहानी सुझााव के साथ पूर्ति होती है और नारी के प्रति होने वाली विभिन्न समस्याओं के साथ–साथ उसमें से बाहर निकलनेवाले रास्ता भी खोलकर दिया है।
- लेखक ने स्त्री प्रतिरोध का एक नया दृष्टिकोण और नारी के प्रति एक सकारात्मक दृष्टिकोण अपनाया है।
- कोई भी नारी उनकी कहानी पढने पर आत्मविश्वासी महिला बन जाएंगी।
- कहानी पढने वालों को समस्याओं को सामने करने की क्षमता, दृढता और आत्मनिर्भर बनने की शक्ति मिलती हैं।
- कहानियॉ केवल कहानियॉ नहीं है, बल्कि स्त्री जीवन की वस्तुतापूर्वक और विश्लेशणात्मक अभिव्यक्ति है।
- पंकज सुबीर ने स्पष्ट किया है कि, नारी का भी अपना व्यक्तित्व होती है समाज तथा पुरुष भी उस व्यक्तित्व को मान्यता देनी चाहिए।
- पंकज सुबीर की कहानियों में आधुनिक जीवन की पृष्ठभूमि में नारी चरित्र की समग्रता प्रतिबिंबित होती है।
- सुबीर की कुछ कहानियों में पुरुष को प्रधानता देने पर भी वे नारी को समान अधिकार देने के पक्ष में हैं।
- स्त्री प्रतिरोध की यही आवाज़ आन्दोलन के रूप में नहीं बल्कि पुरुष सत्तात्मक समाज पर अप्रत्यक्ष रूप से प्रहार करता है।

संक्षेप में, पंकज सुबीर ने अपनी कहानियों में स्त्री के विभिन्न रूपों को सफलतापूर्वक चित्रित किया है। और उनकी कहानियों में समर्पित, त्यागी, निर्भय, आत्मनिर्भर ,शौर्य प्रदर्शन करनेवाली नारियों के साथ, स्त्री समस्याओं पर भी विमर्श हुआ है। उन्होनें अपने स्त्रीवादी लेखन में समाज के विभिन्न परिस्थितियों, उसके संस्कारों पर निर्भयता से दृष्टिवान किया है और स्त्री के अस्तित्व बोध को उजागर करके अपनी आत्मचेतना, आत्मसम्मान, आत्मगौरव, समता और समान अधिकार का पद प्राप्त करने का आत्मबल दिया है। सदियों से हमारे सामाजिक और धार्मिक व्यवस्था कई प्रकार की रिवाज़ों और रूढियों से टूट रही है। इन रिवाज़ों के अन्दर डूबने के बदले आसमान के नयी क्षितिज को नज़र लगाकर अपने अस्तित्व को तलाश करना स्त्रियों का दायित्व है।

शोध की सीमा को ध्यान में सखते हुए मैंने अपने शोध कार्य को पूर्ण करने का प्रयास किया है। परंतु यह शोध कार्य अपने आप में पूर्ण ही होता है, ऐसा नहीं है। यह शोध विषय पंकज सुबीर के साहित्यि रचना तथा स्त्री विमर्श का क्षेत्र इतना विस्तार है कि इस पर और शोध कार्य होने की संभावनाऍ हैं। जैसे –

- पंकज सुबीर के उपन्यसों में स्त्री संवेदना।
- पंकज सुबीर के नाटकों में स्त्री विमर्श।
- पंकज सुबीर के काव्य रचनाओं में स्त्री का मनोवैज्ञानिक पक्ष।
- पंकज सुबीर की कहानियों में पुरुष विमर्श।
- पंकज सुबीर की रचनाओं में समलैंगिकता।
- पंकज सुबीर की कहानियों में मूल्य परिकल्पना।

# संदर्भ ग्रन्थ

## आधार ग्रन्थ


| क्र. सं | लेखक | पुस्तक का नाम | प्रकाशक |
|---|---|---|---|
| 1 | पंकज सुबीर | चौपडे की चुडैलें | शिवना प्रकाशन, सीहोर, 2019 |
| 2 | पंकज सुबीर | होली | शिवना प्रकाशन, सीहोर, 2019 |
| 3 | पंकज सुबीर | महुआ घटवारिन और अन्य कहानियॉ, | शिवना प्रकाशन, सीहोर, 2012 |
| 4 | पंकज सुबीर | ईस्ट इंडिया कंम्पनी | शिवना प्रकाशन, सीहोर , 2009 |
| 5 | पंकज सुबीर | कसाब गॉधी अट यरवादा. इन | शिवना प्रकाशन, सीहोर, 2005 |


## सहायक ग्रन्थ


| क्र. सं | लेखक | पुस्तक का नाम | प्रकाशक |
|---|---|---|---|
| 1 | डॉ. त्रिभुवन राय | आधुनिक साहित्य बोध | साहित्य रत्नाकर, कानपूर, प्र.सं. 20121 |
| 2 | हर्षिता द्विवेदी | लैंगीक विमर्श और यमदीप | अमन प्रकाशन, कानपूर, प्र.सं. 2021 |
| 3 | डॉ. दिलीप मेहरा डॉ.हसमुख परमार | समकालीन हिन्दी साहितय मेंदडॉ. पारुकांत देसाई 'कबिरा' का योगदान | अमन प्रकाशन, कानपूर, प्र.सं. 2021 |
| 4 | डॉ. पीयूष कुमार द्विवेदी | डॉ.रमेश पोखिरियाल 'निशंक का साहित्य विमर्श | अमन प्रकाशन, कानपूर, प्र.सं. 2021 |
| 5 | राकेश कुमार | विमर्श दृष्टि ;पंकज सुबीर की कहानियॉ | शिवना प्रकाशन, सीहोर, 2020 |
| 6 | दिनेश कुमार पाल | पंकज सुबीर की कहानियों का समाजशास्त्रीय अध्ययन | शवना प्रकाशन, सीहोर , 2020 |
| 7 | डॉ. श्याम प्रसाद | रमेश बक्षी के कथा साहित्य में यथार्थ | अमन प्रकाशन, कानपूर, प्र सं. 2020 |
| 8 | डॉ. रूपासिंह चन्देल | समकालीन साहित्य आलोचनात्मक विवेचन | अमन प्रकाशन, कानपूर, प्र.सं. 2020 |
| 9 | डॉ. एस. कृष्ण बाबु | साहित्यक अवधारणाऍ सामयिक संदर्भ | अमन प्रकाशन, कानपूर, प्र.सं. 2020 |
| 10 | कमलेश्वर | नई कहानी की भूमिका | राजकमल प्रकाशननई दिल्ली, तीसरा. सं. 2020 |
| 11 | डॉ. देवयानी महिड़ा, | हिन्दी कथा साहित्य में नारी विमर्श | पराग प्रकाशन, कानपूर,2020 |
| 12 | डॉ. पडित बन्ने | समकालीन हिन्दी साहित्य में आदिवासी विमर्श | अमन प्रकाशन, कानपूर, प्र.सं. 2019 |
| 13 | हमीमा . ओ. पी | समकालील साहित्य और आदिवासी विमर्श | अमन प्रकाशन, कानपूर, प्र.सं. 2019 |

| | | | |
|---|---|---|---|
| 14 | कल्पना शर्मा | स्त्री विमर्श का विविध पहलू | लोकभारती प्रकाशन.......2019 |
| 15 | रेखा सेठी | स्त्री कविता पक्ष और परिप्रेक्ष्य | राजकमल प्रकाशननई दिल्ली, प्र.सं. 2019 |
| 16 | रोहिणी अग्रवाल | स्त्री लेखन :स्वप्न और संकल्प | राजकमल प्रकाशन,नई दिल्ली, दूसरा. सं. 2019 |
| 17 | संजीव कुमार | हिन्दी कहानी की इक्कीसवीं सदि पाठ के पास : पाठ से परे | राजकमल प्रकाशन,नई दिल्ली, प्र. सं. 2019 |
| 18 | गीताश्री | नागपाश में स्त्री | राजकमल प्रकाशन,नई दिल्ली, दूसरा. सं.2019 |
| 19 | महेश दर्पण | हिन्दी कहानी नई और पुरानी | अमन प्रकाशन, कानपूर, प्र.सं. 2019 |
| 20 | डॉ. रितु देवी | महिला कथा लेखन में सिम्मी हर्षिता का योगदान | साहित्य रत्नाकर, कानपूर, प्र.सं. 2019 |
| 21 | डॉ. मिनी ए. आर | साठोत्तर हिन्दी महिला कथाकारों के कहानी साहित्य में नारी | माया प्रकाशन, कानपूर,2018 |
| 22 | एस. विजया | सूर्यबाला कृत गृहप्रवेश की कहानियों में पारिवारिक संबध | साहित्य रत्नाकर, कानपूर, प्र.सं. 2018 |
| 23 | डॉ. चांदणी लक्षमण | चित्रा मुद्गल की कहानियों में नारी चेतना | पंचांगो वान्या पब्लिकेशंस, कानपूर, प्र.सं. 2018 |
| 24 | डॉ. शिवकूमार सी.एस. हडपद | स्त्री कविता में मानवीय संवेदना | अमन प्रकाशन, कानपूर, प्र.सं. 2018 |
| 25 | प्रचार्य बापूराव देसाई, | हिन्दी कहानी में नारी विमर्श | पराग प्रकाशन,कानपूर,2017 |
| 26 | डॉ. सुचिता गायकवाड | दलित उपन्यासों में व्यक्त स्त्री चरित्र | शुभम पब्लिकेशन, कानपूर, प्र.सं. 2017 |
| 27 | रामकाली सरफ | नई कहानी संवेदना और स्वरूप | विश्वविध्यालय प्रकाशन,वारनासी,2017 |
| 28 | डॉ.नीरजा. वी. एस | ममता कालिया की कहानियों में नारी | अमन प्रकाशन, कानपूर, प्र.सं. 2017 |
| 29 | ममता मेहरोता | महिला अधिकार | राधाकृष्ण प्रकाशन,नई दिल्ली, दूसरा. सं. 2017 |
| 30 | डॉ. भावना पाल | मालती जोशी का कथा साहित्य का मनोवैज्ञानिक अध्ययन | अमन प्रकाशन, कानपूर, प्र.सं. 2017 |
| 31 | डॉ. अनिला के पटेल | नारी विमर्श और मैत्रेयी पुष्पा का कथा साहित्य | माया प्रकाशन 2017 |
| 32 | डॉ.गोरेलाल मीना, | हिन्दी साहित्य में स्त्री विमर्श | बाबा पब्लिकेशन,जयपूर,2016 |
| 33 | डॉ. दयानन्द तिवारी | हिन्दी कहानी विविध आयाम | शुभद्रा प्रकाशन,दिल्ली,2016 |
| 34 | अमन खटीक | नारी चेतना | गलोबल अकेडमिक पब्लीशर्स एंड डिस्टीब्यूटर्स,दिल्ली, प्र.सं. 2016 |
| 35 | सुरजीत सिंह | नारी विमर्श आधुनिक साहित्यकारों की दृष्टि में | न्यू इरा बुक एजन्सी, चन्डीघर, 2016 |

| | | | |
|---|---|---|---|
| 36 | डॉ. आर. जयचन्द्रन | समकालीन साहित्य विविध परिदृश्य | अमन प्रकाशन, कानपूर, प्र.सं. 2016 |
| 37 | डॉ. मस्के सन्तोव विष्णु | साठोत्तरी हिन्दी गज़ल में समसामयिकता | विकास प्रकाशन ,कानपूर, प्र.सं. 2016 |
| 38 | डॉ.इन्दु.के. वी | नारी संघर्ष : यात्रा के विविध रंग | जवाहर पुस्तकालय, मधुरा, 2015 |
| 39 | डॉ. कान्ता गुप्ता | नई कहानी और हरिशंकर परसार्ठ का कथा साहित्य | ज्ञान प्रकाशन, कानपूर, प्र.सं. 2015 |
| 40 | डॉ.सूरज मृदुल | भारतीय नारियॉ | विकास पब्लिकेशंस,दिल्ली,प्र.सं.2015 |
| 41 | राजेश जोशी | समकालीनता और साहित्य | राजकमल प्रकाशन,नई दिल्ली, दू. सं. 2015 |
| 42 | मृणाल पाझड | स्त्री लम्बा सफर | राधाकृष्ण प्रकाशन प्राइवेट लिमिटेड, नई दिल्ली, दूसरा. सं. 2015 |
| 43 | डॉ. सुकुमार भंडारे | हिन्दी कहानी आदि से आज तक | अमन प्रकाशन, कानपूर, प्र.सं. 2015 |
| 44 | डॉ. सायरा बानो | कहानीकार स्वयं प्रकाश रचना दृष्टि और रचना शिल्प | अमन प्रकाशन, कानपूर, प्र.सं. 2015 |
| 45 | संचिता सिंह | यौन उत्पीडन और समाज कुसंस्कार और दंड | फीनिक्स बुक इंटरनाशनल,दिल्ली प्र.सं. 2014 |
| 46 | डॉ.पशुपतिनाथ उपाध्याय | समकालीन हिन्दी कहानी दशा और दिशा | जवाहरपुस्तकालय, मथुरा,2014 |
| 47 | डॉ.सैयद मेहरून | स्वातंत्र्योत्तर हिन्दी कहानी में विघटन और नारी संघर्ष चेतना | अमन प्रकाशन, कानपूर, प्र.सं. 2014 |
| 48 | डॉ.उषा सपकाले | हिन्दी उपन्यासों में नारी चित्रण | विद्या प्रकाशन, कानपुर, 2014 |
| 49 | श्याम सुन्दर पाण्डेय | समकालीन हिन्दी कहानी सरोकार और विमर्श | ज्ञान प्रकाशन, कानपूर, प्र.सं. 2014 |
| 50 | डॉ.जगमल आर. जादव | जैनेन्द्र के उपन्यासों में नारी चेतना | नवभारत प्रकाशन, दिल्ली, 2014 |
| 51 | प्रा.शकुन्तला प्रताप वाघ | डॉ. अमरसिंह वधान का नारी विमर्श | अमन प्रकाशन, कानपूर, प्र.सं. 2014 |
| 52 | विजय बहादूर सिंह | समाजिक विमर्श के आईने में चाक | राधाकृष्ण प्रकाशन प्राइवेट लिमिटेड, नई दिल्ली, प्र. सं. 2014 |
| 53 | डॉ.रंचित एम, ड़ॉ. सूर्या बोस | हिन्दी कथा साहित्य मे नारी | जवाहर पुस्तकालय ,मथुरा, प्र.सं.2014 |
| 54 | डॉ. मीरा चन्दा | नागार्जुन का कथा साहित्य | अमन प्रकाशन, कानपूर, प्र.सं. 2013 |
| 55 | शान्ति कुमार स्याल | नारी बनाम नारी | आत्माराम एझड संस,दिल्ली,प्र.सं. 2013 |
| 56 | डॉ. अनिता सिंह | महादवी वर्मा के साहित्य में नारी चिंतन | नीरज बुक सेंटर,दिल्ली, 2013 |

| | | | |
|---|---|---|---|
| 57 | अलका प्रकाश | नारी चेतना के आयाम | लोकभारती पुस्तक विक्रेता तथा वितरक, इलाहाबाद, दू. सं.2013 |
| 58 | डॉ. संगीता के | नारी चेतना की सार्थक तलाश | जवाहरपुस्तकालय, मथुरा,2013 |
| 59 | डॉ. जयरी शिंदे | हिन्दी उपन्यास और विमर्श अद्यतन दृष्टि | ए. बी. एस. पब्लिकेशन, वारणासी, प्र.सं. 2012 |
| 60 | डॉ. टी शुभानंद | नरेश मेहत्ता के काव्यों का सामाजिक चिंतन | अमन प्रकाशन, कानपूर, प्र.सं. 2012 |
| 61 | आचार्य डॉ. हरिशंकर दुबे | महिला उपन्यासकारें की नारीःप्रगति एवं पीडा के आयाम | अमन प्रकाशन, कानपूर, प्र.सं. 2012 |
| 62 | डॉ. विद्याश्री | समकालीन हिन्दी – कन्नड कविता में जनवादी | अमन प्रकाशन, कानपूर, प्र.सं. 2012 |
| 63 | डॉ. वेदप्रकाश अमिताभ | समकालीन हिन्दी साहितय : संवेदना और विमर्श | अमन प्रकाशन, कानपूर, प्र.सं. 2012 |
| 64 | डॉ.टी.श्रीदेवी | सत्तोत्तरी हिन्दी कहानी साहित्य :एक मूल्यांकन | जवाहरपुस्तकालय, मथुरा,2012 |
| 65 | डॉ. संजय ल.मादार | अंतिम दशक की कहानियों में चित्रित विभिन्न परिवेश | जवाहर पुस्तकालय,मथुरा,2012 |
| 66 | प्रियंका शाह | स्त्री उत्पीड़न कामुकता, हिंसा और मीडिया | नई दिल्ली, 2012 |
| 67 | डॉ.व्यकट कशनराव पाटील | मैत्रेयी पुष्पा के साहित्य का समाजशास्त्रीय अध्ययन | अमन प्रकाशन, कानपूर, प्र.सं. 2011 |
| 68 | | नारी कभी ना हारी | फीनिक्सबुक इंटरनेशनल, दिल्ली, 2011 |
| 69 | प्रो.बाळु राठोड़ | महादवी वर्मा के रेखाचित्र एक अध्ययन | अमन प्रकाशन, कानपूर, प्र.सं. 2011 |
| 70 | डॉ. सध्या कुमारी सिंह | परसाई साहित्य में समकालीन यथार्थ | अमन प्रकाशन, कानपूर, प्र.सं. 2011 |
| 71 | डॉ. अंजु शुक्ला | आधुनिक नारी एवं महिला सशक्तिकरण | अमन प्रकाशन, कानपूर, प्र.सं2010 |
| 72 | कृष्णा अग्निहोत्री | स्वातंत्र्योत्तर हिन्दी कहानी व कहानीकार | अमन प्रकाशन, कानपूर, प्र.सं. 2010 |
| 73 | डॉ. गणेश दास | स्वातंत्र्योत्तर हिन्दी कहानी में नारी के विविध रूप | ज्ञान प्रकाशन,कानपूर, 2009 |
| 74 | कुमार कृष्णा | कहानी के नये प्रतिमान | वणी प्रकाशन,नयी दिल्ली,प्र.सं. 2009 |
| 75 | जी.प्रसाद | निर्मल वर्मा के रचना संसार | जवाहर जवाहर पुस्तकालय,मथुरा,2009 |
| 76 | डॉ.चंदा गिरीश | अस्तित्ववादी हिन्दी कहानी | दिव्य डिस्टीब्यूटर्स,कानपूर,2009 |
| 77 | डॉ.सविता जनार्दन | विष्णु प्रभाकर का कहानी साहित्य | साहित्य सागर, कानपूर,प्र.स.2009 |
| 78 | डॉ.राजेन्द्र मिश्र | कहानी : आन्दोलन और प्रवृत्तियाँ | तक्षशिला प्रकाशन,नई दिल्ली, 2009 |
| 79 | डॉ. अनिल सालुंखे | हिमांशु जोशी का कथा साहित्य | दिव्य डिस्टीब्यूटर्स, कानपूर, 2009 |

| | | | |
|---|---|---|---|
| 80 | डॉ. रूपा सिंह | स्त्री–अस्मिता और कृष्णा सोबती | पूर्वोदय प्रकाश, नई दिल्ली, 2008 |
| 81 | डॉ.वसंत दत्तत्रय क्षीरसागर | मोहन राकेश का कथात्मक साहित्य | समता प्रकाशन,कानपूर,प्र.सं.2008 |
| 82 | रमेश कुमारी | संस्कृति साहित्य और स्त्री | अकादमिकप्रतिभा, दिल्ली, 2008 |
| 83 | डॉ.भारती शेळके | महिला रचनाकाारों की कहानियों में जीवन मूल्य | विद्या प्रकाशन,कानपूर,2008 |
| 84 | गोपाल राय | हिन्दी कहानी का इतिहास | राजकमल प्रकाशन,नई दिल्ली,प्र.स. 2008 |
| 85 | डॉ. रेणु त्रिपाठी | महिला सशक्तीकरण वायदे और हकीकत | रोहित पब्लिकेशन हाउस, दिल्ली,2008 |
| 86 | डॉ. के. पी जया | कथाकार कमलेश्वर | जवाहर पुस्तकालय ,दिल्ली,2008 |
| 87 | डॉ.बी.के. कलास्वा | हिन्दी उपन्यास साहित्य में स्त्री विमर्श एवं अन्य आलेख | शान्ति प्रकाशन,दिल्ली, 2008 |
| 88 | नासिरा शर्मा | औरत के लिए औरत | सामयिक प्रकाशन, कानपूर,2007 |
| 89 | डॉ.वैशाली देशपांडे | स्त्रीवाद और महिला उपन्यासकार | विकास प्रकाशन, कानपुर, 2007 |
| 90 | डॉ.उषा देव | स्त्री का संघर्ष | शांति पुस्तक मंदिर, दिल्ली, 2007 |
| 91 | डॉ. ठाकूर विजय सिंह | निर्मल वर्मा के साहित्य में नारी | समता प्रकाशन,कानपूर, 2007 |
| 92 | निर्मैला जैन | महादेवी साहित्य | सेतु प्रकाशन, झांसी, 2007 |
| 93 | प्रेमचन्द | गोदान | राजपाल एन्ट सन्स, नई दिल्ली, 2007 |
| 94 | डॉ. मनोहर | कहॉ खो गई बेटियॉ | अगनानी वाणीप्रकाशन,नईदिल्ली, 2007 |
| 95 | ज्ञानेन्द्र रावत | कंस समाज में औरत | कान्ति बुक सेंटर, दिल्ली, 2007 |
| 96 | मनीषा | और औरत अंग | शिल्पायान, दिल्ली, 2006 |
| 97 | डॉ.जशवंत भाई डी. पांड्या | हिन्दी साहित्य विविध आयाम | ज्ञान प्रकाशन,कानपूर, 2006 |
| 98 | डॉ. अनिता | कृष्णा सोबत्ती के कथा साहित्य में स्त्री का स्वरूप | जवाहर पुस्तकालय ,मथुरा,2006 |
| 99 | रेखा वसन्त पाटील | समांतर कहानी में यथार्थबोध, | जवाहरपुस्तकालय, मथुरा, 2005 |
| 100 | डॉ.आशा उपाध्याय और गुंजन शर्मा | स्त्री समय समाज और शब्द | जनचेतना प्रकाशन, इलाहाबाद, 2005 |

| Sl. No. | Web Site |
|---|---|
| 1 | https://legoland.com.vn/en/a-woman-is-like-tea-bag.html |
| 2 | http://ignited.in/a/57112 |
| 3 | https://www.jansatta.com/politics/indian-woman-exchanged-mirror/74962/ |
| 4 | https://hindi.feminisminindia.com/2017/02/02/women-struggles-history-hindi/ |
| 5 | https://www.anhadkriti.com/kirti-bhardwaj-essay-shoDh-patra-hindi-padya-sahitya-mein-naarI-vimarsha |
| 6 | https://www.academia.edu/ |
| 7 | https://www.hindisamay.com/contentDetail.aspx?id=7685&pageno=1 |
| 8 | http://ignited.in/a/57112 |
| 9 | https://anvpublication.org/Journals/HTMLPaper.aspx?Journal=International+Journal+of+Advances+in+Social+Sciences%3BPID%3D2014-2-1-3 |
| 10 | https://vishwahindijan.blogspot.com/2017/11/blog-post_21.html |